Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

डेयरी उद्योग पर भौगोलिक क्षेत्र का प्रभाव (उत्तर एवं दक्षिण गुजरात के मध्य तुलनात्मक अध्ययन)

डॉ. सुनील कुमार खटीक [1] | सुखदेव डांगी [1]

[1] सहायक आचार्य, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर.

[1] शोधार्थी, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर.

ABSTRACT:

यह शोध-पत्र गुजरात में डेयरी विकास के भौगोलिक अध्ययन से संबंधित है। इस शोध-पत्र में गुजरात के डेयरी विकास के अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। गुजरात में डेयरी उद्योग एक प्रमुख पूरक उद्यम और किसानों की आय का नियमित स्रोत रहा है। स्वतंत्रता के बाद से दूध उत्पादन में सात गुना वृद्धि के साथ भारतीय डेयरी क्षेत्र ने काफी अच्छी प्रगति की है, लेकिन प्रति पशु उपज के मामले में प्रगति अभी भी कम है जो काफी अस्थिर है। साहित्य से पता चलता है कि उत्पादकता वृद्धि के लिए दो दृष्टिकोण हैं, तकनीकी प्रगति और बेहतर दक्षता। वर्तमान अध्ययन गुजरात राज्य में डेयरी किसानों की तकनीकी दक्षता को प्रभावित करने वाले कारकों को निर्धारित करने का एक प्रयास है जिसमें दूध सहकारी समितियों की भूमिका पर विशेष जोर दिया गया है। वैध निष्कर्ष निकालने के लिए बहु समाश्रयण विश्लेषण और समाश्रयण वृक्ष उपागम का उपयोग किया गया। परिणामों ने संकेत दिया कि सामाजिक-आर्थिक कारकों जैसे डेयरी सहकारी समिति में सदस्यता, गैर-कृषि वार्षिक आय, सूचना तक पहुंच और झुंड के आकार ने किसानों की तकनीकी दक्षता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। डेयरी सहकारी समितियां किसानों को डेयरी संसाधनों के साथ-साथ तकनीकी जानकारी के रूप में कई इनपुट प्रदान करती हैं जिसने उनकी दक्षता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। अध्ययन दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने और स्थायी डेयरी की ओर स्थानांतरित करने के लिए नीतिगत नुस्खों के साथ समाप्त होता है।

KEYWORDS:

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
27th March 2024	28th March 2024

प्रस्तावना एवं परिचय:

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का अभिन्न अंग कृषि एवं पशुपालन रहा है। या यूँ कहें कि सभ्यता के आरम्भ से ही मानव कृषि एवं पशुपालन से जुड़ा हुआ है। फसलें और पशुपालन भारतीय कृषि के आवश्यक गुण हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। भारत, वर्ष 2015-16 (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2016) में लगभग 155 मिलियन टन उत्पादन के साथ दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक होने के बावजूद, दुग्ध उत्पादकता दुनिया के अधिकांश अग्रणी देशों की तुलना में सबसे कम है। भारतीय डेयरी उद्योग विशेष रूप से अत्यधिक खंडित है। इसमें असंगठित क्षेत्र का बड़ा दबदबा है। संगठित डेयरी क्षेत्र अपने मजबूत, कुशल और अनुकूल कच्चे माल के सोर्सिंग मॉडल के कारण इस क्षेत्र के राजस्व का 80 प्रतिशत हिस्सा लेता है। हालाँकि, भारत में, यह कुल दूध के विपणन का केवल 20 प्रतिशत है (कुलकर्णी और जैन, 2015)। भारत में डेयरी सहकारी समितियां 1946 से गुजरात के कैरा जिले के आनंद शहर (अब जिला) में **'अमूल (आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड)'** के नाम से लोकप्रिय पहली किसान एकीकृत डेयरी सहकारी की स्थापना के बाद अस्तित्व में आई। इसे निजी व्यापारियों द्वारा किसानों के अत्यधिक शोषण के खिलाफ लड़ने के लिए आगे लाया गया था। डेयरी सहकारी समितियां मूल्य वर्धित उत्पाद के उत्पादन के लिए दूध के प्रसंस्करण की सुविधा भी देती हैं। कई ग्रामीण लोग अभी भी असंगठित क्षेत्र से जुड़े हैं जो उन्हें कोई स्थायी लाभ या सामाजिक सुरक्षा प्रदान नहीं करता है।

भारत का दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है, जिसका श्रेय डॉ. वर्गीज कुरियन को जाता हैं, जिन्होंने श्वेत क्रान्ति चलाई। श्वेत क्रान्ति की शुरूआत 1970 ई. में वर्गीज कुरियन के निर्देशन में ऑपरेशन फ्लड-प् योजना के समारम्भ से हुई। इसके अन्तर्गत देश के दस राज्यों में राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम शुरू किये गये। ऑपरेशन फ्लड (सन् 1979-85) के अन्तर्गत, जनपद और राज्य स्तर पर एक त्रिस्तरी सहकारी व्यवस्था अपनायी गयी। ऑपरेशन-फ्लड जिसका समापन अप्रैल, 1996 में हुआ है। इससे देश के 250 जिले लाभान्वित हुए। ऑपरेशन-फ्लड कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए आनन्द, मेहसाणा एवं पालनपुर (बनासकांठा) में शोध केन्द्र खोले गये है। श्वेत क्रान्ति की सफलता मुख्यतः दुधारू पशुओं की नस्ल में सुधार और नयी प्रौद्योगिकी के अपनाये जाने पर आधारित है। ग्रामीण सहकारी समितियों की इसमें सक्रिय भागीदारी रही हैं। भारतीय डेयरी उद्योग का भविष्य नयी सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। गुजरात राज्य डेयरी सहकारी आंदोलन में अग्रणी रहा है जहां डेयरी उद्योग अन्य राज्यों की तुलना में अधिक संगठित और कुशल है। यह देश के सबसे बड़े दूध उत्पादक राज्यों में से एक है, जिसमें कुल दूध उत्पादन में 9.24 प्रतिशत का योगदान है (डीओएएच, 2020-21)। राज्य के कुल परिवारों में से लगभग 32 प्रतिशत परिवार डेयरी और पशुपालन गतिविधियों में लगे हुए हैं, जो आय के प्राथमिक या द्वितीयक स्रोत के रूप में काम करते हैं।

गुजरात की भौगोलिक स्थिति: पश्चिमी भारत में स्थित एक राज्य है। इसकी उत्तरी-पश्चिमी सीमा जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमा भी है, पाकिस्तान से लगी है। प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता की दृष्टि से गुजरात, भारत का अत्यंत महत्त्वपूर्ण राज्य है। इसकी उत्तरी-पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगी है। गुजरात का क्षेत्रफल 1,96,024 वर्ग किलोमीटर है।

विस्तार: भारतीय प्रायदीप के पश्चिमी तट पर स्थित होने के कारण इस राज्य में देश का तीसरा सबसे लंबा समुद्री किनारा है जो कि 1300 किमी लंबा है। भौगोलिक तौर पर राज्य के तीन मुख्य उपविभाजन हैः उत्तर पूर्व में बंजर और पथरीला कच्छ, जिसमें कच्छ का प्रसिद्ध रण या रेगिस्तान शामिल है और छोटे-छोटे पहाड़ों से बना पहाड़ी क्षेत्र सौराष्ट्र या काठियावाड़। मुख्य भूमि कच्छ से शुरू होकर दमनगंगा नदी तक है जो कि कछारी मिट्टी से भरी है। गुजरात से साबरमती, नर्मदा, तापी और दमनगंगा नदियाँ गुजरती हैं। राज्य के उत्तरी और पूर्वी भाग की सीमा अरावली, सतपुड़ा, विंध्य और सहयाद्री पर्वतों से घिरी है। राज्य का एक बड़ा हिस्सा गिर, डांग और पंचमहल जैसे जंगलों से ढंका है। इन जंगलों में नम और सूखे दोनों तरह के वनस्पति मिलते हैं। उनमें से खासकर कच्छ के पास के इलाकों में कांटेदार हैं। गुजरात के दक्षिणी भाग की आबोहवा नम और उत्तरी हिस्से की शुष्क है। राज्य में बारिश का सालाना औसत 33 से 152 सेमी है जबकि डांग में लगभग 190 सेमी बारिश दर्ज होती है। गुजरात के कर्क रेखा पर स्थित होने के कारण उत्पन्न कठिन जलवायु को

खंभात की खाड़ी और अरब सागर सहज कर देते हैं।

उद्देश्य: प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार हैं।

- उत्तर एवं दक्षिण गुजरात में डेयरी उद्योग के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन किया गया है।
- उत्तर एवं दक्षिण गुजरात में डेयरी उद्योग की विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है।
- उत्तर एवं दक्षिण गुजरात में डेयरी विकास के महत्व को समझाया गया है।
- उत्तर एवं दक्षिण गुजरात में डेयरी विकास हेतु किए गए प्रयासों को स्पष्ट किया गया है।

परिकल्पना:

- वर्तमान में उत्तर एवं दक्षिण गुजरात में डेयरी उद्योग में निरन्तर वृद्धि हो रही है।
- वर्तमान में उत्तर एवं दक्षिण गुजरात में सरकार द्वारा डेयरी विकास हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

शोध पत्र का विधि-तन्त्र

यह शोध पत्र अध्ययन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन है, जिसमें सम्पूर्ण राजस्थान के डेयरी क्षेत्र के समग्र सदस्यों का एक सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। 5 वर्ष की सेम्पल आकार से राज्य के 10 जिलों की दो-दो प्राथमिक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों से 3-3 सदस्यों का चयन दैव निदर्शन विधि से कर कुल 297 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। शोध तकनीक में इन उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक समंक प्रश्नावली द्वारा सदस्यों से प्राप्त किये गये हैं, जिनका औसत एवं प्रतिशत की सामान्य सांख्यिकी विधि द्वारा विश्लेषण किया गया है।

सामग्री एवं विधि

उत्तरदाताओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में आये परिवर्तन (सकारात्मक एवं नकारात्मक) का विश्लेषण करने के लिए तीन मापदण्डों (उत्तरदाताओं का जनांकिकीय विवरण, आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन) के 14 सूचकों को लिया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों के अनुसार 62 प्रतिशत दुग्ध उत्पादक उत्तरदाता 30 से 60 वर्ष की उम्र के थे। शैक्षणिक दृष्टि से 68 प्रतिशत उत्तरदाता सैकण्डरी एवं 15 प्रतिशत प्राथमिक स्तर के रहे हैं अर्थात् इस व्यवसाय में 84 प्रतिशत मध्यम श्रेणी के लोग हैं। एकल परिवार एवं उत्तराधिकार प्रथा से परिवारों का आकार एवं भू-जोत का आकार कम होता चला गया है। लगभग 86 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनकी सदस्य संख्या 6 तक है। लगभग तीन चैथाई (75 प्रतिशत) परिवारों के पास 4 हैक्टेयर तक ही भूमि है। डेयरी व्यवसाय के बढ़ने से पशुपालकों के पशुओं का आकार भी बढ़ रहा है। लगभग 94 प्रतिशत परिवारों के पास चार से ज्यादा पशुधन पाया गया था। लगभग 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं को डेयरी का लगभग 8 वर्ष से ज्यादा का अनुभव रहा है।

तालिका-1 उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति में सुधार

क्र.सं.	सूचक	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	प्रतिदिन दुग्ध उत्पादन		
	(1) 5 लीटर तक	117	39.39
	(2) 6 से 12 लीटर	147	49.49
	(3) 12 लीटर से अधिक	33	11.12
	कुल	**297**	**100.00**
2	आय प्रतिवर्ष (रूपये)		
	(1) 1.50 लाख	57	19.19
	(1) 1.51 लाख से 3 लाख	159	53.54
	(3) 3 लाख से अधिक	81	27.27
	कुल	**297**	**100.00**
3	चल व अचल परिसम्पत्तियों का निर्माण		
	(1) अल्प	22	7.75
	(2) मध्यम	237	79.80
	(3) व्यापक	38	12.62
	कुल	**297**	**100.00**
4	भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि		
	(1) अल्प	27	9.09
	(2) मध्यम	182	61.11
	(3) व्यापक	88	29.80
	कुल	**297**	**100.00**

स्त्रोत - शोध सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका-1 के अनुसार उत्तरदाताओं के डेयरी व्यवसाय से आर्थिक स्थिति में आये क्रान्तिकारी सकारात्मक परिवर्तन का निष्कर्ष निकाला गया है। 50 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन 6 से 12 लीटर तक दुग्ध का योगदान सहकारी डेयरी एवं निजी डेयरियों को देते हैं। लगभग 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं की डेयरी व्यवसाय से प्रतिवर्ष की आय 1.51 लाख से 5 लाख रूपये तक है। आय की दृष्टि से 93 प्रतिशत लोगों ने अपनी चल-अचल परिसम्पत्तियों का निर्माण किया है और शत-प्रतिशत का यह मानना है कि उनकी सामाजिक जीवन की भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि हुई है।

तालिका-2 उत्तरदाताओं की सामाजिक स्थिति में सुधार

क्र.सं.	सूचक	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	शिक्षा का विस्तार		
	(1) अल्प	15	5.05
	(2) मध्यम	244	82.32
	(3) व्यापक	38	12.62
	कुल	**297**	**100.00**
2	स्वास्थ्य-वृद्धि		
	(1) अल्प	102	34.34
	(2) मध्यम	179	60.10
	(3) व्यापक	11	5.56
	कुल	**297**	**100.00**
3	रहन-सहन एवं खान-पान में वृद्धि		
	(1) अल्प	40	13.63
	(2) मध्यम	207	69.70
	(3) व्यापक	50	16.67
	कुल	**297**	**100.00**
4	सामाजिक आयोजनों पर प्रभाव		
	(1) अल्प	108	36.36
	(2) मध्यम	162	54.55
	(3) व्यापक	27	9.09
	कुल	**297**	**100.00**

स्त्रोत - शोध-सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका-2 के अनुसार डेयरी व्यवसाय से लगभग 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षा में वृद्धि

एवं 65 प्रतिशत ने स्वास्थ्य सुविधाओं में मध्यम एवं व्यापक स्तर में वृद्धि हुई थी। लगभग 87 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि हमारे रहन-सहन, खान-पान आदि में वृद्धि हुई। लगभग 55 प्रतिशत सामाजिक आयोजनों में भी पैसा व्यय करने लगे हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलकर आया है कि डेयरी व्यवसाय से दुग्ध उत्पादकों एवं पशु-पालकों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में व्यापक योगदान दिया है।

उपरोक्त विश्लेषण के पश्चात् अध्ययन में यह भी तथ्य सामने आये हैं कि तीव्रगति से बढ़ते डेयरी व्यवसाय में उत्तम नस्ल के दुधारू पशुओं के अंतर्गत दुधारू भैंसों का अभाव, तथा, दक्षिण गुजरात में कम दुग्ध-मूल्यवर्धित उत्पाद, विपणन सुविधाओं का अभाव मुख्य समस्या रही हैं।

उत्तर और दक्षिण गुजरात का विपणन का तरीका पूरी तरह से विपरीत है क्योंकि उत्तर गुजरात के डेयरी व्यवसायी संगठित सहकारी क्षेत्र से बहुत अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं, उन्हें दूध की निजी बिक्री और दुग्ध-मूल्यवर्धित उत्पादों में कम दिलचस्पी है। दूसरी ओर, दक्षिण क्षेत्र के अधिकांश डेयरी व्यवसायी दूध की निजी बिक्री और दुग्ध-मूल्यवर्धित उत्पादों की निजी बिक्री की ओर अधिक रुचि रखते हैं क्योंकि दक्षिण क्षेत्र में दूध उत्पादन की उच्च लागत के कारण डेयरी व्यवसायियों का मानना है कि उन्हें उच्च कीमत मिल सकती है एवं निजी-बिक्री से उन्हें अधिक लाभ भी मिल सकता है।

REFERENCES

1. बेदी एम.एस., (1987) डेयरी डवलपमेन्ट मार्केटिंग एवं इकानोमिक ग्रोथ, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

2. मोदी, एच. ए., (20), डेयरी माईक्रोबॉयलोजी, आविष्कार पब्लिकेशन, जयपुर।

3. डॉ. महेन्द्र सिंह, डॉ. वी. पी. चहल, डॉ. पी. एल. कल्ला, (2011), आधुनिक डेयरी फार्मिंग, आविष्कार पब्लिकेशन, जयपुर।

4. राव वी.एम. (2004), इवेलवेशन ऑफ यूमन डेयरी प्राजेक्ट इन राजस्थान, अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5. यादव सुबे सिंह, (2006) ग्रामीण बैंकिंग एवं विकास, सबलाइन पब्लिकेशन, जयपुर।

6. श्री नारायण एवं डॉ. विश्वनाथ कुमार (2011) आय के साधन, पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय, अनुशीलन पत्रिका, टवस-ग्गप्प्प् नाटाणी प्रकाश (2004) डेयरी उद्योग, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।

7. राकेश कुमार व राहुल कुमार (2018), सोसियो-इकनोमिक अपलिफ्ट थ्रू मिल्क प्रोकेक्शन इन बिहार, इण्डिया इन्टरनेशनल जरनल सी.एम.एण्ड ए. एस. वोल्यूम- 7, 2018

8. वर्मा संजय, (2009), डेयरी कॉपरेटिव इन इण्डिया, सतू संकल्प 17.01.2009

9. शर्मा सिरीस, (2019), कॉमर्शियल डेयरी फार्मिंग इन जयपुर डिस्ट्रिक्ट ऑफ राजस्थान, एण्ड साइंटिफिक एग्रीकल्चर, वॉ-3, 7 जुलाई 2019.

10. आर्थिक सर्वे भारत सरकार 2018-19, नई दिल्ली, वित्त एवं आर्थिक मन्त्रालय – 2018

11. वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2018-19 आर. सी.डी.एफ. जयपुर।

12. वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2017-18, पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।